PHILOSOPHY

Date - 28/05/2020

Philosophy (NET/SUB)

Samkhya :- (Satkaryavada)

Ajeet kumar
Assistant professor, C.M.S College, Dumwan, Bihar, Khutauna

सत्कार्यवाद सांख्य दर्शन का कारणता का सिद्धांत है जो न्याय दर्शन के कारण-सिद्धांत के ठीक विपरीत है। उल्लेख है उल्लेखनीय है कि सांख्य दर्शन का यह सिद्धांत केवल उपादान कारण तक सीमित है यद्यपि वह निमित्त कारण और प्रयोजन कारण में भी विश्वास करता है। इसमें मुख्यतः इस बात पर विचार किया जाता है कि कार्य का कारण से क्या संबन्ध है? क्या कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व अपने उपादान कारण में विद्यमान रहता है? यह भी स्मरणीय है कि प्रत्येक दार्शनिक विचारधारा; जो सृष्टि के उद्भव-विकास का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना चाहती है और विश्व की अनेकता एवं विविधता विविधता को

मूल में एकता की खोज करना चाहता
चाहती है, ~~और विश्व की~~ का आधार
उसका कारण विषयक सिद्धांत होता है।
सांख्य दर्शन भी इसका अपवाद नहीं।
उसका भी अपना एक कारणता विषयक
दृष्टिकोण है। वह इस प्रसंग में
सत्कार्यवाद का सिद्धांत प्रस्तुत करता
है। जिसका अर्थ है कि कार्य अपनी
उत्पत्ति से पूर्व उपादान कारण में
विद्यमान रहता है। सत्कार्यवाद उसके
प्रधानकारणवाद का आधारभूत सिद्धांत है
क्योंकि उसकी मान्यतानुसार यह सम्पूर्ण
सृष्टि अस्तित्व में आने से पूर्व ~~प्रकृ~~
प्रकृति (प्रधान) में अव्यक्त रूप से
विद्यमान था।

सांख्य दर्शन का सत्कार्यवाद न्याय
वैशेषिक दर्शन के कारण-सिद्धांत के
विरोध में अस्तित्व में आया। न्याय-
वैशेषिक दर्शन का कारण-सिद्धांत ~~असत~~
असत्कार्यवाद है जो कारण में कार्य के
प्रागभाव को अस्वीकार करता है।

Scanned with CamScanner